सेवा की असली खुशबू

इंसान अपने लिए कितना जीता है उससे ज्यादा महत्वपूर्ण है कि वह दूसरों के लिए कितना जीता है। निःस्वार्थ सेवा की भावना से हमने दूसरों के लिए जो किया है, वही जीवन का सही जमा का खाता है। मानव जीवन कर्म के सिद्धांत पर आधारित है। मानव जैसा करेगा वैसा पायेगा। जीवन में मनुष्य को उसके सर्वोत्तम कर्मों के आधार पर सुख, शांति, प्रेम, शक्ति, स्वास्थ्य और समृद्धि मिलता है। जीवन में सबसे श्रेष्ठ सत्कर्म निःस्वार्थ भाव और दिल से की गई मानव की और प्रकृति की सेवा है।

"दूसरों के लिए जीने से ही हम अमर हो सकते हैं" ..... संत फ्रांसिस।

सेवा लोगों का आशीर्वाद, सद भावना, और दुआ प्राप्त करने का सबसे अच्छा साधन है। मनुष्य के सकारात्मक, रचनात्मक और सर्वांगी विकास के लिए निस्वार्थ सेवा का बहुत महत्व है। सेवा आपके आंतरिक विकास के लिए कई अवसर प्रदान करती है। सेवा से हम बहुत कुछ सीख रहे हैं।

जीवन में व्यर्थ विचार, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म से बचने और मन और हृदय की सच्ची शुद्धि के लिए जीवन में यदि कोई सर्वोत्तम साधन है, तो वह सेवा है। बिना आसक्ति के की गई सेवा से आत्मशुद्धि होती है, इसलिए हमारे यहाँ कहा जाता है कि...

"सर्व भूत: हिते रता:" दूसरे शब्दों में, सभी प्राणी मात्र के कल्याण में लगे रहो।

सेवा से अहंकार, घृणा, ईर्ष्या जैसे नकारात्मक भावों का नाश होता है और नम्रता, शुद्ध प्रेम, करुणा, क्षमा इन भावों का विकास होता है।

आपका अगला जन्म कैसा होगा इसका आधार काफी हद तक पिछले जन्मों के और इस जन्म में आपके द्वारा किए गए अच्छे कर्म पर हैं। इसलिए श्रीमद् वल्लभाचार्यजी ने कहा है कि...

"सतकर्मो कामधेनु है यदि उसका दोहन आता है तो आनंद रूपी दूध मिलेगा।"

प्रखर वैज्ञानिक, आइंस्टीन ने भी कहा है, "मुझे कुछ लेने के बजाय देने में अधिक आनंद आता है।"

सेवा करे तो कैसे करे:

नि:स्वार्थ और निष्काम भाव से सेवा करो, किसी भी प्रकार का स्वार्थ, कामना, इच्छा, आकांक्षा, अपेक्षा से किए गए कर्मों को सेवा नहीं कहा जा सकता। प्राप्ति, उपलब्धि वा महिमा आपके द्वारा किए गए कर्मों का प्रत्यक्ष एन्केशमेंट है। निस्वार्थ भाव से की गई सेवा ही संचित होती है।

अहंकार, सेवा का सबसे बड़ा शत्रु है। यदि सेवा में अहंकार उत्पन्न होता है, तो वह सेवा पर पानी फेर देता है। सेवक का प्रथम लक्षण है निराभिमान। गुजरात के भक्त कवि नरसिंह मेहताजी ने इस संदर्भ में कुछ ऐसी पंक्तियां लिखी है:

"वैष्णव जन तो तेने रे कहिये जे पीड पराई जाणे रे। पर दु:खे उपकार करे तो ये मन अभिमान न आणे रे ।।"

अर्थात वैष्णव उसीको कहा जाएगा जो दुसरो की पीड़ा को जानता है और दुसरो के ऊपर

उपकार करते हुए भी मन में कोई अहंकार नहीं रखता।

गुप्त रूप से सेवा करना, यही जीवन का सबसे बड़ा आनंद है। ऐसा कहते है कि आपके दाहिने हाथ से की गई सेवा बाएं हाथ को भी न पता चले।

मान पान की अपेक्षा बिना हम सेवा करे। बहुत से लोग समाज में अपना नाम और प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए दान करते हैं। अपने नाम की तकती लगवाते है। इस दिखावे में दान और सेवा का मूल्य समाप्त हो जाता है। कुछ लोग अपना मान-सम्मान बढ़ाने और लोगो की नजर में आने की लालसा से सेवा करते है। ऐसी सेवा को सेवा कह सकते है क्या? कई लोग ऐसे भी हैं जो शिकायत करते रहते हैं कि मेरी सेवा की किसी को कदर ही नहीं है। ईशु ख्रिस्त ने चेतावनी दी थी कि *"मैं आपको चेतावनी देता हूं, कि अच्छे कार्य लोगों की नजर के सामने मत करें, अन्यथा आप को अपने परमपिता परमात्मा से उसका बदला नहीं मिलेगा।" सेवा करें तो प्रेम से करें, दिल से करें, निष्काम भाव से करे।*

किसी भी प्रकार की सेवा का मूल्य कम ज्यादा नहीं होता, फिर वो गंदगी को साफ करने का ही क्यू न हो? गांधीजी ने किसी भी काम को हल्का नहीं समझा। झाड़ू-पोछा करना, शौचालय की सफाई करना, गांधीजी के लिए सबसे बड़ा कर्मयोग था। सेवा कार्य सर्वश्रेष्ठ पूजा है। जीवन में सेवा की शुरुआत बहुत छोटे और हल्के काम से करनी चाहिए। ऐसा करने से अहंकार का नाश होगा।

प्रजापिता ब्रह्मा, जो ब्रह्मकुमारी संस्था की स्थापना में सहायक थे, उन्होंने भी सेवा का सार समझाते हुए कहा, *" निःस्वार्थ निष्काम भाव से की गई सेवा; निराभीमान से नम्रतापूर्वक की हुई सेवा; सम्मान और प्रशंसा की अपेक्षा के बिना की हुई सेवा; प्रत्यक्ष हुए बिना गुप्त रूप से की गई सेवा को ही सेवा कहा जा सकता है।"* ऐसी सेवा भविष्य के दिव्य जन्मों के लिए संचित होती है।

सबसे अच्छी सेवा क्या और कौन सी है?

भूखे को भोजन देना, प्यासे को पानी पीलाना, निर्वस्त्र को वस्त्र दान करना, बेघरों को आश्रय देना, विकलांगों या नेत्रहीनों को सहारा देना, अशिक्षितों को शिक्षित करना, असुरक्षितों की रक्षा करना, धन से गरीबों की मदद करना, बीमारों का इलाज करना आदि निस्संदेह मानव सेवा हैं। इससे भगवान प्रसन्न होते हैं। लेकिन क्या यह सर्वोत्तम सेवा है? अगर हम गहराई से सोचें तो हम समझ

पाएंगे कि ये सेवाएं जरूर मानव सेवा है, लेकिन सामान्य सेवाएं हैं। कितने व्यक्तियों के लिए, कितने समय तक, कितनी बार ऐसी सेवा की जा सकती है? यदि इसके लिए अधिक धन की आवश्यकता है तो इसे कब तक संतुष्ट किया जा सकता है?

इस संदर्भ में विचार करें तो सर्वोत्तम सेवा वही हो सकती है जिससे मनुष्य का जीवन मूल्यनिष्ठ बने; स्वास्थ्य, सुख और संपदा से सम्पन्न बने; किसी को किसी की मदद की जरूरत ही न रहे। ऐसा समाज हो जिसमें सब की सब सारी जरूरत पूरी हो और हरेक व्यक्ति तनाव, व्यग्रता, हताशा, निराशा, भय, चिंता से दूर रहें। हम सेवा ऐसी करे कि ऐसे समाज की स्थापना हो जहां उपरोक्त सामान्य सेवाओं की आवश्यकता ही न रहे। उपरोक्त सामान्य समस्याओं का समाधान ही सच्ची मानव सेवा में है।

आज दुनिया जिन समस्याओं का सामना कर रही है उनकी जड़ में अज्ञानता है। आज सच्चे आध्यात्मिक ज्ञान की समझ के अभाव के कारण आज मानव विषय-विकारों के

प्रभाव में विकर्म करता रहता है। परिणाम स्वरूप वह दु:ख, अशांति, दरिद्रता, आधि, व्याधि, उपाधि से पीड़ित होता हैं। इस संदर्भ में अगर सबसे अच्छी सेवा हो, तो यह है कि लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान के शाश्वत सत्य की सच्ची समझ दे कर के उन्हें जागृत किया जाए। साथ ही उन्हें हमेशा सदविचार एवं सत्कर्म करने के लिए प्रेरित किया जाए, ताकि उनके हाथ से कोई बुरा काम न हो। परिणामस्वरूप, वे सच्चे सुख, शांति और पवित्रता को प्राप्त कर सकते हैं।

इसलिए ज्ञानदान को हमारी संस्कृति में सबसे अच्छा दान माना जाता है। जब व्यक्ति को आध्यात्मिक ज्ञान के रूप में तीसरा नेत्र प्राप्त होता है, तब वो विकारों पर विजय प्राप्त करता है। उसके विकर्म समाप्त हो जाते हैं और वह पूर्ण स्वस्थता और समृद्धि को प्राप्त करता है। दुनिया में ऐसे बहुत कम संगठन है जो इस तरह की आध्यात्मिक जागृति लाने का काम करते हैं। इसमें अगर कोई ध्यान खीचने वाली संस्था है तो वह है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय। दुनिया भर के 175 से अधिक देशों में 8500 से अधिक सेवा केंद्र द्वारा अध्यात्म विज्ञान और राजयोग मेडिटेशन कि मुफ्त शिक्षा प्रदान करता एक अनोखा विश्व विद्यालय है।

यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में सच्चा सुख, शांति और शक्ति प्राप्त करना चाहता है; जीवन को मूल्यनिष्ठ, चरित्रवान बना कर जीवन की सही दिशा पाना चाहता है; हर रिश्ते की खुशबू का आनंद लेना चाहते हैं; इश्वर से संबंध जोड़कर इश्वर की अनुभूति करना चाहते है तो इस विश्वविद्यालय की मुलाक़ात जरूर लेनी चाहिए| और संस्था द्वारा हो रही सच्ची सेवाओं में सहभागी बनना चाहिए |

------- ॐ शांति ------

ब्रह्माकुमार प्रफुल्लचंद्र
सानडिएगो; यु एस ए
(M) +91 98258 92710